रजब के महीने में रोज़ा रखाना

﴿ الصوم في شهر رجب ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندي]

मुहम्मद सालेह अल-मुनज्जिद

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ الصوم في شهر رجب ﴾

« باللغة الهندية »

محمد صالح المنجد

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

रजब के महीने में रोज़ा रखना

प्रश्नः

क्या रजब के महीने में रोज़ा रखने के विषय में कोई विशेष फज़ीलत (पुण्य) वर्णित है ?

उत्तरः

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है।

सबसे पहले :

रजब का महीना उन हराम (शुभ और सम्मानीय) महीनों में से एक है जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया है :

﴿ إِنَّ عِدَّةَ ٱلشُّهُورِ عِندَ ٱللَّهِ ٱثۡنَا عَشَرَ شَهۡرٗا فِي كِتَٰبِ ٱللَّهِ يَوۡمَ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ مِنۡهَآ أَرۡبَعَةٌ حُرُمٞۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلۡقَيِّمُۚ فَلَا تَظۡلِمُواْ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمۡۚ ﴾ [التوبة: ٣٦]

''अल्लाह के निकट महीनों की संख्या अल्लाह की किताब में बारह (12) है, उसी दिन से जब से उसने आकाश और धरती को पैदा किया है, उनमें से चार हुर्मत व अदब –सम्मान– वाले हैं। यही शुद्ध धर्म है, अतः तुम इन महीनों में अपनी जानों पर अत्याचार न करो।'' (सूरतुत–तौबाः 36)

हराम (हुर्मत वाले) महीने : रजब, जुल–क़ा'दा, जुल–हिज्जा, और मुहर्रम हैं।

तथा बुख़ारी (हदीस संख्या : 4662) और मुस्लिम (हदीस संख्या : 1679) ने अबू बक्रह रज़ियल्लाहु अन्हु से और उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''साल 12 महीनों का है जिन में चार हुर्मत –सम्मान एंव प्रतिष्ठा– वाले हैं, तीन लगातार; जुल–क़ा'दा, जुल–हिज्जा और मुहर्रम तथा चौथा रजब–मुज़र (मुज़र क़बीले से संबंधित रजब का महीना) जो जुमादा (अल–आखिरा) और शाबान के मध्य में पड़ता है।''

इन महीनों को हुर्मत व अदब वाले महीने कहे जाने के दो कारण हैं :

1. इन महीनों में लड़ाई करना हराम (वर्जित) है सिवाय इसके कि दुश्मन स्वयं इसकी शुरूआत करे।
2. इन महीनों में हुर्मतों को भंग करना और हराम चीज़ों की सीमा का उल्लंघन करना दूसरे महीने की अपेक्षा अधिक गंभीर है।

इसीलिए अल्लाह तआला ने हमें इन महीनों में पाप और अवज्ञा करने से मना किया है। अल्लाह तआला ने फरमायाः '' अतः तुम इन महीनों में अपनी जानों पर अत्याचार न करो।'' (सूरतुत–तौबाः 9/36)

जबकि पाप करना इन महीनों में और इनके अलावा अन्य सभी महीनों में हराम और वर्जित है, किन्तु वह इन महीनों में बहुत अधिक हराम है।

अल्लामा सा'दी रहिमहुल्लाह (पृ. 373) फरमाते हैं :

''अल्लाह तआला के फरमान (**तुम इन महीनों में अपनी जानों पर अत्याचार न करो।**) में इस बात की संभावना है कि सर्वनाम बारह महीनों की ओर लौटता है, और अल्लाह तआला ने यह वर्णन किया है कि उसने इन महीनों को बंदों के लिए मात्रा बनाया है, और यह कि इन्हें (यानी इन महीनों को) उसकी उपासना से आबाद किया जाये, और अल्लाह तआला का, इनके द्वारा उपकार करने और इन्हें बंदों के हितों की सेवा के लिए समर्पित करने पर, शुक्र अदा किया जाये। अतः तुम्हें इनमें अपनी जानों पर अत्याचार करने से सावधान रहना चाहिए।

और इस बात की भी संभावना है कि सर्वनाम चार हुर्मत वाले महीनों की तरफ लौटता है, और उन्हें विशिष्ट रूप से इन महीनों में अत्याचार करने से रोका गया है जबकि हर समय अत्याचार करने की मनाही है, क्योंकि इन महीनों की हुर्मत अधिक है, और इन महीनों में अत्याचार करना दूसरे

महीनों की अपेक्षा अधिक गंभीर और सख्त है।'' (अल्लामा सा'दी की बात समाप्त हुई।)□

दूसरा :

जहाँ तक रजब के महीने का रोज़ा रखने का संबंध है, तो विशिष्ट रूप से उसके रोज़ा की फज़ीलत या उसके किसी दिन के रोज़ा के संबंध में कोई सहीह हदीस साबित नहीं है।

अतः कुछ लोग जो इसके कुछ दिनों को रोज़ा के साथ विशिष्ट करते हैं यह आस्था रखते हुये कि उसे दूसरों पर फज़ीलत प्राप्त है, तो शरीअत में इसका कोई आधार नहीं है।

किन्तु पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी हदीस आयी है जो हुर्मत (सम्मान) वाले महीनों में रोज़ा रखने के मुस्तहब होने पर तर्क है (और रजब भी हुर्मत वाले महीनों में से एक है), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''हराम (हुर्मत व अदब वाले) महीनों में से (कुछ दिनों का) रोज़ा रखो और (कुछ को) छोड़ दो।'' इसे अबू दाऊद (हदीस संख्या : 2428) ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने ज़ईफ अबू दाऊद में इसे ज़ईफ क़रार दिया है।

यह हदीस –यदि वह सहीह है तो – हराम महीनों में रोज़े के मुसतहब होने पर दलालत करती है, अतः जिस आदमी ने इस कारण रजब के महीने में रोज़ा रखा और वह इसके अलावा अन्य हराम महीनों में भी रोज़ा रखता है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है, परन्तु केवल रजब के महीने में विशिष्ट रूप से रोज़ा रखना, तो यह सही नहीं है।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ''मजमूउल फतावा'' (25/290) में फरमाते हैं :

''अलबत्ता जहाँ तक विशिष्ट रूप से रजब के रोज़े का संबंध है तो इसकी सभी हदीसें ज़ईफ, बल्कि मौजू (मनगढ़ंत) हैं, उलमा इन में से किसी हदीस पर भरोसा नही करते हैं, और वे इस प्रकार की ज़ईफ नहीं हैं जो फज़ाइल के अन्दर बयान की जाती हैं, बल्कि वे सामान्य रूप से गढ़ी हुई झूठी हदीसें हैं . . .।''

तथा मुस्नद अहमद इत्यादि में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक हदीस वर्णित है कि आपने हराम महीनों का रोज़ा रखने का हुक्म दिया है और वे रजब, जुल–क़ा'दा, जुल–हिज्जा और मुहर्रम हैं। तो यह सभी चारों महीनों के रोज़े के बारे में है न कि उसके बारे में जो रजब को खास कर लेता है।'' संक्षेप के साथ समाप्त हुआ।

अल्लामा इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह फरमाते हैं :

''रजब के रोज़े और उसकी कुछ रातों में नमाज़ पढ़ने के बारे में वर्णित हर हदीस झूठी और गढ़ी हुई है।'' ''अल–मनार अल–मुनीफ (पृ. 96) से समाप्त हुआा।

तथा हाफिज़ इब्ने हजर रहिमहुल्लाह अपनी किताब ''तब्ईनुल अजब बिमा व–र–दा फी फज़ले रजब'' (पृ. 11) में

फरमाते हैं:

''रजब के महीने की फज़ीलत, या उसके रोज़े की फज़ीलत, या उसके किसी विशिष्ट दिन के रोज़े की फज़ीलत, या इस महीना में किसी विशिष्ट

रात का क़ियाम करने की फज़ीलत में कोई सहीह हदीस नहीं आई है जो प्रमाण (तर्क) बन सके।''

शैख सैयिद साबिक़ रहिमहुल्लाह अपनी किताब ''फिक़्हुस्सुन्नह'' (1/383) में कहते हैं :

''रजब के महीने को अन्य दूसरे महीनों पर कोई अतिरिक्त फज़ीलत (प्रतिष्ठा) प्राप्त नहीं है, सिवाय इसके कि वह हराम महीनों में से है। तथा सहीह हदीस में यह बात नहीं आयी है कि विशिष्ट रूप से उसके रोज़े की कोई फज़ीलत है, और इस विषय में जो हदीसें वर्णित हुई हैं, वे हुज्जत और प्रमाण नहीं बन सकती हैं।''

तथा शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह से सत्ताईसवीं रजब के रोज़े और उसकी रात को क़ियाम करने के बारे में प्रश्न किया गया।

तो उन्हों ने उत्तर दिया :

''सत्ताईसवीं रजब के दिन रोज़ा रखना और उसकी रात को क़ियाम करना (रात को इबादत करना) और इसको विशिष्ट करना बिद्अत है, और हर बिद्अत पथ भ्रष्टता – गुमराही – है।''

''मजमूओ फतावा इब्ने उसैमीन'' (20 / 440)

इस्लाम प्रश्न और उत्तर